Paper - 4

Dr. Raj Gopal,
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

Immediate Inference
(साक्षात अनुमान)

अनुमान का अर्थ है एक या अधिक आधार वाक्यों से निष्कर्ष निकालना। अनुमान के विभिन्न प्रकार होते हैं। पारंपरिक तौर पर इन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

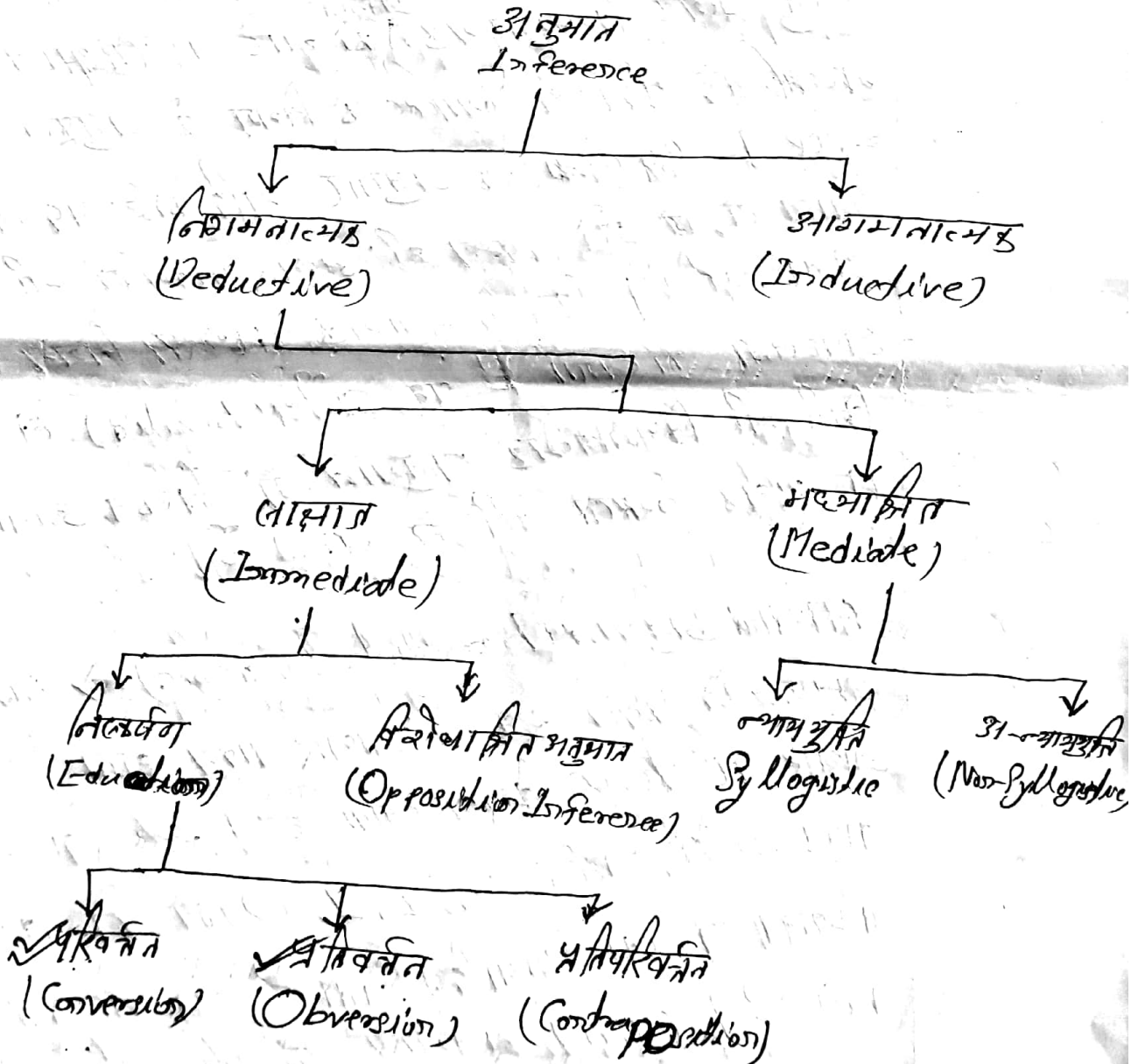

साक्षात अनुमान और मध्याश्रित अनुमान में भेद का मुख्य आधार है - आधार वाक्यों की संख्या। जहाँ साक्षात अनुमान में केवल एक आधार वाक्य होता है, वहीं मध्याश्रित अनुमान

Scanned with CamScanner

में कम से कम दो आधार वाक्य होते हैं, और ये दोनों आधार वाक्य संयुक्त रूप से निष्कर्ष को निगमित करते हैं। वह अनुमान जिसमें केवल दो आधार वाक्य होते हैं उसे न्यायवाक्य अनुमान कहते हैं। यदि आधार वाक्य दो से अधिक हो तो मध्याश्रित अनुमान अ-न्यायवाक्यीय (Non-Syllogistic) बन जाता है।

परन्तु प्रत्येक निगमनात्मक अनुमान को चाहे वह साक्षात हो या मध्याश्रित, पदों की व्याप्ति के नियम के अनुकूल होना चाहिए। इस नियम के अनुसार यदि कोई पद निष्कर्ष में व्याप्त हो, तो उसे अवश्य ही आधार वाक्य में भी व्याप्त होना चाहिए। जिस निगमनात्मक तर्क में इस नियम की अवहेलना की जाती है वह अवैध (Invalid) हो जाता है। किसी भी निगमनात्मक अनुमान में निष्कर्ष आधार वाक्य से अधिक व्याप्त नहीं हो सकता है।

साक्षात अनुमान (Immediate Inference) ⇒ साक्षात अनुमान में केवल एक ही आधार वाक्य होता है जिसके आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। एक दिए गए तर्क वाक्य में से, अर्थात A, E, I, O में से किसी एक तर्कवाक्य से जो आपादित होता है उसे साक्षात अनुमान कहते हैं। साक्षात अनुमान दो प्रकार का होता है।

(i) विरोधाश्रित अनुमान

(ii) निवर्तन Education